

विस्थापन: संतुष्टि से असंतुष्टि

डॉ. चक्रपाणि उपाध्याय

व्याख्याता, समाजशास्त्र, राजकीय महाविद्यालय, नाथद्वारा

सहस्राब्दियों से मानव ने अपने चतुर्मुखी विकास के लिए स्थायित्व को प्राथमिकता दी है। स्थायित्व एक ऐसा आयाम है जिससे मानवीय समाज व सभ्यता ने विकास यात्रा के साथ-साथ अपने सामाजिक ताने बाने को मजबूत किया है। जीवन यापन के आधारों को सुदृढ़ता प्रदान की है। स्थायित्व ने संस्कृतियों के विकास एवं निरंतर को प्रोत्साहित किया है। स्थायित्व एवं मानसिक व सामाजिक स्वास्थ्य सकारात्मक रूप से संबंध रहे हैं।

अपने स्थान को छोड़ने के भाव मात्र से मन अशांत हो जाता है। आधुनिक समाजों में विकास और विस्थापन साथ-साथ चलने वाली प्रक्रियाएं हैं। विगत कुछ दशकों में विकास जनित विस्थापन में व्यापक वृद्धि हुई है। (माथुर 2011) अनेकों विकास योजनाओं हेतु हजारों कभी-कभी लाखों तक स्थानीय निवासियों को विस्थापित किया जाता है। विस्थापन के साथ-साथ आधुनिक लोकतांत्रिक व्यवस्थाओं में पुनर्वास की व्यवस्था पर भी बल दिया जाता है। एक अनुमान के अनुसार विकास जनित विस्थापन से संपूर्ण विश्व में सुदूर पर्वतीय लोगों में निवास करने वाले जनजातीय लोग सर्वाधिक प्रभावित हुए हैं। (काबरा ए 2006) विस्थापन का दंश जनजातीय समाजों ने सबसे ज्यादा झेला है। पुनर्वास एक सरकारी व्यवस्था है

जो लोक कल्याणकारी कही जाती है, वास्तव में जीवन के मूल्य में केवल आर्थिक आधार ही नहीं होते हैं। जीवन की संपूर्णता में आर्थिक पक्ष के साथ-साथ सामाजिक एवं सांस्कृतिक पक्ष भी महत्वपूर्ण है। सामान्यतया श्रेष्ठ से श्रेष्ठ पुनर्वास योजनाओं में भी आर्थिक पक्ष पर ही ज्यादा ध्यान केंद्रित होता है और ऐसे में सामाजिक सांस्कृतिक एवं भावनात्मक पक्ष अनदेखे वह अछूते रह जाते हैं। (स्टीवंसन 2012) सामान्यतः सामाजिक सांस्कृतिक व भावनात्मक कीमत विस्थापन की सर्वाधिक है और इससे सामाजिक ताना-बाना, सांस्कृतिक बंधन व भावनात्मक रिश्ते प्रभावित होते हैं। इसको होने वाली क्षति की पूर्ति आर्थिक आधारों पर किया जाना संभव नहीं है। प्रस्तुत शोध में मध्य भारत में स्थित कूनों पालपुर वन्य जीव अभ्यारण से विस्थापित सहरिया जनजातीय लोगों की विस्थापन के उपरांत की जीवन दशाओं को दर्शाया गया है। मूलतः प्रस्तुत शोध पत्र में मानसिक स्वास्थ्य व सामाजिक सुरक्षा के चरों का विश्लेषण किया गया है।

पृष्ठभूमि

कूनों पालपुर वन्य जीव अभ्यारण मध्य प्रदेश में स्थित है। दशकों से यहां पर वन्यजीवों के साथ सहरिया जनजाति के लोग बस्तियां बसा कर रहते आ रहे हैं। अनेकों गांव व बस्तियों में सहरिया प्रकृति की गोद में वन्य उत्पादों का संग्रहण करके एवं उनका व्यापारियों को बेचकर अपनी आजीविका चलाते रहे हैं। मूल रूप में गोंद एवं चीड़ के पेड़ों के वन्य उत्पादों को सहरिया जनजाति के लोग संग्रहित करते हैं। घने जंगलों से प्राप्त अन्य वन्य उत्पादों से अपना जीवन यापन करते हैं एवं गोंद व चीड़ को बेचकर अन्य आवश्यकताओं हेतु धन अर्जित करते हैं। यदा कदा आवश्यकताओं हेतु मध्य प्रदेश के अन्य क्षेत्रों में कुछ माह के लिए खेती कटाई धान कटाई के समय भी जाकर धन अर्जित करते हैं। किसी भी विशिष्ट स्वास्थ्य समस्या अथवा सामाजिक आवश्यकता पर धन के प्रबंधन हेतु बकरियां रखते हैं।

उच्च जातियों के लोगों जिस तरीके से सामान्य आवश्यकताओं या आपातकालीन आवश्यकताओं के लिए सोने का संग्रह करते हैं और वही सोना उनके आपातकालीन आर्थिक आवश्यकताओं को पूरा करता है जनजातीय समाज एवं विशेष कर सहरिया लोगों में बकरी उनकी इस प्रकार की तात्कालिक आवश्यकतापूर्ति का आधार है।

शोध प्रारूप व तकनीक

वर्तमान अध्ययन में गुणात्मक तथ्यों के संकलन हेतु नृजातीय विज्ञान की पद्धतियों का प्रयोग किया गया है। अध्ययन करता तीन वर्षों तक कई महीनों सर्वेक्षित गांव में रहे हैं। वैज्ञानिक आधार पर तथ्यों को संकलित करने के लिए संरचित सर्वेक्षण अनुसूची का प्रयोग किया गया है। भावनात्मक मूल्यों को समझने के लिए (वृत्त) सकारात्मक एवं नकारात्मक प्रभाव प्रमाण का प्रयोग किया गया है।

निष्कर्ष

अध्ययन में भेरूड़ा गांव के परिवार के मुखिया से समस्त जानकारीयां एकत्रित की गई है। इसका कारण उनका विस्थापन पूर्व एवं विस्थापन पश्चात दोनों ही परिस्थितियों का अनुभव होना रहा है। यह गांव भी अभ्यारण के आंतरिक भाग में स्थित था। उत्तरदाताओं के भावनात्मक संवेगों और अनुभवों को एकत्रित करने हेतु खुले प्रश्नों को भी समाविष्ट किया गया है। प्रस्तुत शोध पत्र में विस्थापित

जनजातीय सदस्यों के विगत तीन महीनों में सुख अथवा दुख की अनुभूति को विभिन्न सामाजिक व स्वास्थ्य आधारों पर संकलित किया गया है।

जब ग्रामीणों से उनके मानसिक स्वास्थ्य का मूल्यांकन करने के लिए कहा गया, तो बेहरुदा के प्रत्येक तीन में से एक विस्थापित ग्रामीणों ने स्वयं को "कमजोर" बताया। उन्होंने खुद को "कमजोर" बताया। बेहरुदा के ग्रामीण तनावग्रस्त, निराश, बेकार, बोझिल और निराश होने जैसे अवसाद के लक्षणों को काफी हद तक महसूस कर रहे हैं। बेहरुदा के ग्रामीण खुशी, जीवन संतुष्टि, अपने बच्चों के भविष्य के प्रति आशावाद और आध्यात्मिक स्वास्थ्य के उच्च स्तर की रिपोर्ट करते हैं।

खाद्य असुरक्षा और जल असुरक्षा का उच्च स्तर और सामाजिक समर्थन कम हो रहा है। बेहरुदा के लोग बीमार होने पर अपने इलाज के लिए विभिन्न संस्थाओं पर भरोसा करते हैं। उन्हें दाइयों, तांत्रिकों, हड्डी जोड़ने वालों और मालिश करने वालों जैसे पारंपरिक चिकित्सा स्रोतों पर ज्यादा भरोसा है। उन्हें अपनी जमीन और जंगल की कमी महसूस हो रही है। ज्यादातर लोग विस्थापन के बाद खुश नहीं हैं।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

- [1]. काबरा, ए. 2006 इम्पैक्ट ऑफ इन्वॉलन्टरी डिस्प्लेसमेंट ऑन द ट्राइबल कम्युनिटी (ए केस स्टडी ऑफ शेफीर्ड (एडिट) क्रोनिक पावर्टी एंड डेवलपमेंट पालिसी इन इंडिया
- [2]. माथुर एच एम 2011 ए इंट्रोडक्शन एंड ओवरव्यू इन एच एम माथुर एडिटेड रिसैटिंग डिस्प्लेसिड पीपल पॉलिसी एंड प्रैक्टिस इन इंडिया पी 121 लंदन एंड न्यू दिल्ली रूटलेज
- [3]. स्टीवेंसन 2012 वाटर इन सिक्योरिटी इन थ्री डाइमेंशंस एंड एंथ्रोपोलॉजी पर्सपेक्टिव ऑन वाटर एंड वूमेंस साइकोलॉजिकल डिस्ट्रेस इन इथोपिया सोशल साइंस और मेडिसिन 75ए392. 400